पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा — पाठ्यक्रम

विषय: भारतीय ज्ञान परम्परा (आईकेएस)

यह पाठ्यक्रम एनआईटीटीटीआर भोपाल में **भारतीय ज्ञान परम्परा (आईकेएस)** विषय में पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा हेतु तैयार किया गया है। अभ्यर्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे नीचे सूचीबद्ध क्षेत्रों की मूल शब्दावली, ग्रंथ-स्रोतों तथा वैचारिक ढाँचों से परिचित हों।

यूनिट 1: भारतीय ज्ञान परम्पराओं की आधारभूमि

- चतुर्दश विद्यास्थान — अध्ययन की चौदह पारम्परिक शाखाएँ: पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, छह वेदांग (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, कल्प), तथा चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद)।
- उपवेद — आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद तथा अर्थशास्त्र का अनुप्रयुक्त ज्ञान-धाराओं के रूप में परिचयात्मक अवलोकन।
- अट्ठारह पुराण — उनके नाम तथा पाँच निर्धारक लक्षण (पंचलक्षण): सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित।
- वेदांग — उनके उद्देश्य तथा वैज्ञानिक स्वरूप, शुद्ध संस्कृत उच्चारण एवं संप्रेषण के आधार के रूप में स्वर-शिक्षा (शिक्षा) और व्याकरण पर विशेष बल।

यूनिट 2: भारतीय दार्शनिक परम्पराएँ और समाज

- पुरुषार्थ — जीवन के चार लक्ष्य: धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष; महाभारत, मनुस्मृति तथा वैशेषिक सूत्र में धर्म की ग्रंथगत परिभाषाओं सहित।
- आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन — चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शन (नास्तिक) का अवलोकन; न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, पूर्वमीमांसा तथा उत्तरमीमांसा/वेदांत (आस्तिक)।
- प्रमाणशास्त्र — प्रामाणिक ज्ञान के साधन: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि; प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय तथा प्रमा की श्रेणियाँ।
- प्राचीन गुरुकुल एवं शिक्षा केंद्र — नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला तथा शास्त्रीय भारत के अन्य प्रमुख संस्थान।
- भगवद्गीता (दैवी एवं आसुरी सम्पत्ति, अध्याय 16), रामायण (मर्यादापुरुषोत्तम राम) तथा महाभारत (विदुर-नीति) नैतिक एवं सभ्यतागत चिंतन के स्रोतों के रूप में।
- अर्थशास्त्र — राजनय अवधारणाएँ: सप्तांग (राज्य के सात अंग), षड्गुण (नीति के छह उपाय), राजधर्म तथा योगक्षेम।

यूनिट 3: भारतीय ज्योतिष (खगोलशास्त्र)

- काल के वैदिक मान — वर्ष, मास, दिन; 354 दिनों का चांद्र वर्ष तथा अधिमास (अधिक मास) की प्रणाली।
- पंचांग — भारतीय पंचांग के पाँच अंग: नक्षत्र, तिथि, योग, करण तथा वार; विक्रम एवं शालिवाहन संवत् प्रणालियाँ तथा राष्ट्रीय पंचांग।
- आर्यभटीय में ग्रह-गणना का प्राथमिक परिचय, तथा आर्यभट से नीलकंठ तक ग्रह-प्रतिमान के विकास-क्रम।

यूनिट 4: स्वास्थ्य और कल्याण

- आयुर्वेद — ऐतिहासिक विकास, प्रमुख ग्रंथ-स्रोत, तथा आधारभूत दोष-धातु-मल सिद्धांत; स्वस्थ (स्वास्थ्य), दिनचर्या तथा ऋतुचर्या की परिभाषाएँ।
- रोगों का वर्गीकरण (आधिदैविक, आध्यात्मिक, आधिभौतिक) तथा आयुर्वेद में चिकित्सा उपागमों एवं नैदानिक विशेषज्ञताओं का व्यापक क्षेत्र।
- योग — परिभाषा, अष्टांग योग, तथा आसन, प्राणायाम एवं ध्यान के स्वास्थ्य-लाभ; योगिक शोधन विधियाँ (षट्कर्म)।
- सिद्ध चिकित्सा पद्धति का संक्षिप्त परिचय — आधारभूत त्रिदोष अवधारणा तथा निवारक चिकित्सा के प्रति इसका दृष्टिकोण।

यूनिट 5: भारतीय वास्तुकला और वास्तु

- हिंदू मंदिर वास्तुकला की आधारभूत अवधारणाएँ — नागर, द्राविड़ तथा वेसर शैलियाँ।
- प्रतिनिधि प्राचीन एवं मध्यकालीन संरचनाएँ — शैली, काल तथा अधिष्ठाता देवता का प्राथमिक ज्ञान (यथा, खजुराहो, कोणार्क, ऐहोल तथा बादामी के मंदिर)।
- पारम्परिक जल-संग्रहण एवं संचयन प्रणालियाँ — बावड़ियाँ, तालाब तथा राजस्थान एवं बिहार जैसी क्षेत्रीय तकनीकें।
- वास्तु शास्त्र की आधारभूत बातें — केवल प्रारंभिक अवधारणाएँ।

यूनिट 6: भारतीय गणित

- शुल्बसूत्रों में ज्यामिति — लंबवत् समद्विभाजक रेखाओं तथा वर्गों की रचना-विधियाँ; बौधायन-पाइथागोरस प्रमेय।
- दशमलव स्थानमान प्रणाली तथा परंपरागत अंकन प्रणालियाँ — आर्यभटीय, भूतसंख्या तथा कटपयादि पद्धति।

- आर्यभट (ज्या सारणियाँ), ब्रह्मगुप्त (शून्य, धनात्मक एवं ऋणात्मक संख्याएँ) तथा भास्कर की लीलावती (अंकगणित एवं ज्यामिति) का योगदान।
- केरल संप्रदाय का अवलोकन — π हेतु माधव की श्रेणी तथा भारतीय गणित में अनंत श्रेणियों की आधारभूमि।

यूनिट 7: रसायन विज्ञान और धातुकर्म (अवलोकन)

- शास्त्रीय चिकित्सा ग्रंथों में रसायन विज्ञान — महाभूतों की अवधारणा तथा यौगिक-निर्माण के गुण।
- भारत की धातुकर्म विरासत — स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह तथा अन्य धातुओं के प्रसंस्करण पर प्रारंभिक ग्रंथ के रूप में अर्थशास्त्र।
- भारतीय रसायन विज्ञान में अम्ल एवं क्षार का विकास — वनस्पति-आधारित स्रोतों से लेकर मध्यकाल के खनिज अम्लों तक।

यूनिट 8: कला — भारतीय प्रदर्शन एवं दृश्य कलाएँ

- भरत मुनि के नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण का परिचय; नवरस की अवधारणा।
- भारत के आठ शास्त्रीय नृत्य रूपों का अवलोकन (भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, कथकली, कुचिपुड़ी, कथक, ओडिसी, मणिपुरी, सत्रिया)।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत का वर्गीकरण — हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक पद्धतियाँ; ताल प्रणाली का सामान्य अवलोकन।
- भारतीय चित्रकला परम्पराओं (मधुबनी, पट्टचित्र, पहाड़ी) पर रामायण तथा महाभारत का प्रभाव।

यूनिट 9: प्राचीन भारत और विश्व

- पाश्चात्य जगत में आईकेएस का प्रभाव — प्राचीन यूरोपीय भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव तथा यूनानी विचारकों (सुकरात, प्लेटो, प्लोटिनस) पर भारतीय दार्शनिक चिंतन का प्रभाव।
- दक्षिण-पूर्व एशिया में आईकेएस का प्रभाव — भारतीय-प्रभावित राज्य (श्रीविजय, खमेर, पगान) तथा मंदिर वास्तुकला (अंगकोर, प्रम्बानन, बाली)
- रामायण, महाभारत तथा संस्कृत अभिलेखों का दक्षिण-पूर्व एशियाई कला, रंगमंच तथा भाषा पर प्रभाव।

- योग का वैश्विक प्रभाव — भारतीय चिंतन को पश्चिम तक ले जाने वाली प्रमुख विभूतियाँ (स्वामी विवेकानंद, परमहंस योगानंद, श्री अरविंद) तथा आधुनिक पाश्चात्य विचारकों पर आईकेएस का प्रभाव।